दलित जातियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अनिल कुमार

प्राचीनकाल, पूर्व वैदिक काल, मध्यकाल और वर्तमान में दलित नारी की समाज में कम स्थिति रही है, उसे कम अधिकार प्राप्त थे और वे कौन से कारण रहे जिसके चलते ज्योतिबा फुले दंपत्ति को नारी की दासता से मुक्ति दिलाने हेतु आंदोलन चलाने की आवश्यकता पड़ी, ईसापूर्व 1200 के आस-पास मातृ सत्तात्मक और स्त्री सत्ता प्रमुख होने के बावजूद आर्यों से हारे अनार्यो को दास व उनकी पत्नियों को दासी बनाना शुरु हुआ, उन कारणों का खुलासा व आज समाज में दलित नारी की जो स्थिति है, उसमें महामना ज्योतिबा फुले का योगदान कम नहीं है तथा आजादी के बाद पांच दशकों में वर्तमान में दलित महिलाओं के शोषण और मुक्ति की दिशा में मनुवादी पुरुष की मानसिकता बदलने और उसमें नैतिकता जगाने हेतु समयबद्ध कार्यक्रम की आवश्यकता है। वैदिक युग से (पूर्व) दलित वर्ग की कुंवारी कन्याओं को शिक्षा तथा ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का अध्ययन करने के लिए समान अवसर उपलब्ध करवाए जाते थे। विधवाओं के साथ भी परिवार में सम्मानजनक व्यवहार होता था। पति को पत्नी का और पत्नी को पति का मित्र माना जाता था। पारिवारिक उत्सवों एवं कार्यक्रमों में महिला की भूमिका अहम होती थी। साररूप में कहा जाए तो पूर्व वैदिक काल में दलित नारी की स्थिति सर्वश्रेष्ठ थी। धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए 'युगल' शब्द का प्रयोग किया जाता था। ऐसे आयोजनों में दोनों एक साथ होकर वृक्षों की पूजा करते थे। प्रकृति को अर्घ देना, पूर्वजों के लिए पानी छोड़ना तथा सूर्य को जल चढ़ाने का कार्य किया जाता था। बच्चों के जन्म पर बधाई देना, बड़े होने पर पाणिग्रहण करवाना, धान्यों की पूजा करवाना आदि प्रमुख धार्मिक कार्य थे, जिनमें दलित महिलाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान होता था। बाल-विवाह नहीं होते थे। पर्दा प्रथा नहीं थी। विदुषी महिलाएं जनपदीय दरबारों में भी जाती थीं। खेमा, सुभद्रा, जातक, अमरा, ज्योति, सुमेधा, अनुपमा आदि ऐसी प्रसिद्ध विदुषी महिलाएँ थी।